Topic 23

Date
Page

समानाधिकरण कर्मधारय समास – 5

नलोपो नञः।

नञो नस्य लोपः स्यादुत्तरपदे।

न ब्राह्मणोऽब्राह्मणः

तस्मान्नुडचि लुप्तनकारान्नञ उत्तरपदस्याजादेर्नुडागमः स्यात्। अनश्वः। अश्वभावेऽव्ययीभावेन सहायं विकल्प्यते। (रक्षोहागमध्वसन्देहाः प्रयोजनम्' इति। अनृतायामसंहितम्' इति च वाल्मीकि प्रयोगात्। तेन अनुपलब्धिः, अविवादः, अविघ्नम् इत्यादि सिद्धम्।। नञो नलोपस्तिङि क्षेपे' (वा०) अपचसि त्वं जाल्म।

नैकधा इत्यादौ तु नशब्देन इत्यादौ तु नशब्देन सह 'सुपा' इति समासः।

लुप्तनकार नञ् (जिस नञ् के नकार का लोप हो गया हो) से परे अजादि उत्तरपद (जिसके आदि में कोई स्वर वर्ण हो) का अवयव 'नुट्' होता है। 'नुट्' का 'उट्' इत्संज्ञक है। अतः टित् होने से, 'आद्यन्तौ टकितौ' परिभाषा से अजादि उत्तरपद का आद्यवयव बनता है। उदाहरण के लिए 'न अश्वः' (घोड़े से भिन्न) – इस विग्रह में 'नञ्' का सुबन्त 'अश्वः' के साथ समास तथा नलोपो नञः से नकार का लोप हो 'अ अश्व' रूप बनता है।

यहाँ नकारलोप वाले नञ् (अ) से
परे अजादि उत्तरपद 'अश्व' है, अतः प्रकृत
सूत्र से 'नुट्' (न्) होकर अन् अश्व'
= 'अनश्व' रूप बनेगा। तब विभक्ति-कार्य
हो 'अनश्वः' रूप सिद्ध होता है।

नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचिन-
कुलनखनपुंसक (vi) नक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या।
पाद् इति शत्रन्तः। वेदा इत्यसुन्नन्तः।
न सत्या असत्याः। न असत्या नासत्याः।
न मुञ्चतीति नमुचिः। न कुलमस्य। नखमस्य।
न स्त्री पुमान्। स्त्रीपुंसयोः पुंसकभावो
निपातनात्। न क्षरतीति नक्षत्रम्। क्षीयतेः
क्षरतेर्वा क्षत्रमिति निपात्यते। न क्रामतीति
नक्रः। 'क्रमेर्डः' न अकमस्मिन्निति-
नाकः

नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम्।

नग इत्यत्र नञ्प्रकृत्या वा। नगाः - अगाः
पर्वताः। अप्राणिषु इति किम् - अगो
वृषलः शीतेन। 'नित्यं क्रीडा-'
इत्यतो नित्यम् इत्यनुवर्तमाने -

नलोपो नञः

उत्तरपद परे होने पर 'नञ्' के
नकार का लोप होता है। उदाहरण
के लिए 'न ब्राह्मणः' में उत्तरपद ब्राह्मण
परे होने के कारण 'नञ्' 'न' के नकार
का लोप होकर अ ब्राह्मण रूप बनता है।